

९६
४

“अथ”

१६
४

ग्रन्थनामः-	“सफुटश्लोकसंग्रहः”	
कर्तृनामः-	...	
विषयः-	सुभाषितम्	

sputa sloka sangraha

Subha Shitam .

2127

वमकरस्य चिजं नं प्रुहं निधं नं
पवित्रोषैर्गुरुकृतं ॥ ४८ ॥ कारुः कृष्णः
पिकः किष्णः कौभेदोपिककाकैः ॥ ४९ ॥
संत काळेसं प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः
५० ॥ चैत्रे मासिकलो न सूर्य किं न ॥ ५१ ॥
कल्ले पेंतरे जी प्रपा कथिकनः किं पीये
तेस्यो ययः किं ये नु य माहि षं पायिकने
वायः कथं मं गतं ॥ सो मो वा शनै च नो मृ
तमिदं तत्त च ना दृश्यते श्रीपतां पवित्ता
सलान सुसखे पदो चते तपि मा ॥ ५२ ॥ ५३ ॥
पां धुं पुस्तक धन सदा मां त्र तिष्ठ ॥ ५४ ॥
अतनु ज्वलं पीं दिता सि बल तव सौख्य
पकृतो य मो पेरा सः ॥ ५५ ॥ स प्रप यवे क्ष
नाहं क्षुद्र दा दृष्टा पि नि सं वने समर्थः
कलांत श्रुति तो सि ये क्ष क गृहे किं ते
कां ठ पे किं ते का स्ति गृहे तव प्रिय तम
वे गदं हं लो या ॥ कानांत कुच कुं भ मदे नव
जायितं तु वक्रा मृतं न मां नां विनिहं
तु सुय त मा पाव के हि मा तु ॥ ५३ ॥
कासि तं तरु जी कते गृह पति किं ब्र

स्नानविपत्ता दधाना हर्षा गिर नयन तेजो
 हतमपि ॥ इयं मुग्धा दुग्धा बुद्धिबल ॥
 पात्रकस्य चक्षु भाषा आशान्ता तथैव
 च ॥ पुनरतः कर्षते आशा ॥ लज्जा कर्षति पृ
 थुतः ॥ ६० ॥ माणिलुठति पादाब्जा काचः
 तेन सिंघार्यते ॥ क्रयविक्रिये वेलायां का
 ॥ काचो माणिर्मणिः ॥ ६१ ॥ तेषु विश्व
 मेव पनादिनादि पुनयः ॥ ६२ ॥ मात्रा ल
 लाडुहिनाग ये कदाप्यसो भवेतु ॥ इ
 द्विपाता बलवन्ता मोदिदो समपि कृष
 ति ॥ ६३ ॥ अस्मत्प्राप्तसमये कुरु मंगलादि
 किं नोदसि प्रियसखे न दकारं तं मो मो प्रा
 णमाथ विवहानं लतीव तापं च मोठावदि
 गलितं प्रमलोचनभ्यां ॥ ६४ ॥ केनां हि मोक्ष
 वपि तापयंति न तस्मिन्नेव तसि कंकनीयं
 विमो गतसहृदयं मदीयये तत्रैव लिखिता
 तसमप्येषि तापं ॥ ६५ ॥ माणिक्यविद्वत्पि वि
 यं मदीयां तत्रैव नेयादिवसा कियंता ॥ संप्र
 सवेष लिखितमो ग्यबुद्ध्या कर्ता हि मां को

३३
नपितापमंति॥६६॥ अपि दिवसे मने श्री पम्ही
नीसमनि तं नज निषु निनतो रुः कै न विष्णो
नमः॥ कथं पकं पं पं गं लस्व भावेन
नावसुखमविमकासं तत्र कातत्रवति॥६७॥
पाः नी पं पतु मिच्छामि ततः क म लो चने॥
पदि कस्य सिने चामि नो दस्य सि पि वा
म्यहं॥६८॥ विश्वासेन कथा मुदा कथयति
बुधां सपत्नी प्रति इच्छा जान सुखं मयानु
भवितुं शुलातकोपे तिका॥ तर्ज्या दृढता
दिता ति चतु ग साया ह पश्चात्कथं दृष्ट
तादृशं मभूतं भगिनी केने भे पुनर्जागृ
ते॥६९॥ मां भि का गार्थ मागम्य जातस्य सद
प्रति॥७०॥ दृष्ट्वा तस्य स्वभारं भूय संति
हर्षुहः॥७१॥ किमेकै कठिण तौ तनु
ननु मध्ये जा ह्यन किं चि न जयने सत्र
सीतचो रैः॥७२॥ एतां हि रा विबुधु रवीं रा
मनं विहस्य हे मुठ गच्छसि बहिर्बुद्धको पि
शेषः॥७३॥ प्राची कं कं म राग पि जुन मि
भा न दो पि दु न रा का दी पौ पांडु न ता मुपे
ति गगने न प्रभा ता न काः॥ नापु याति
सुगंध मादन नु हैन न्हादि ताः कोकि

३५
सहजोगुणानां कस्तुं शीवमपत्रमंगन
विनाभगा नगंड लब्ध नै नो निपुंसखि
चंदनं स्तन तटे व्यो तननेत्रांजनं ॥ नागो
नस्व लितत का व्यर पुटे सा कठिका का
नतिकिं रुं सिसि जगजं द्रम तग मनी किं
वापति स्त किं रुः ॥ ७५ ॥ इत्यं ते श्रुणु का
वां प्रमसखे जन्म मि ते च स्फुटं नो नु ए स
खि मंदि ने प्रिय तमे नै वा पति स्त रुं रुः ॥ मां
दृष्ट्वा नमो व नां हा कि मु खे कंदर्प दपा प्र
हं मुक्ता दे स गुरुः प्रिये वा स हसा पद्मा
कुतः संगमः ॥ ७६ ॥ अस्मि नु ना ए नि पद
मेति ध्यान नगं व्ये के पे गंध दाता मिति च
पुनर्वि ए काया प्रदाने ॥ देव स्य त्वेति च मिति
वं न्या द सं वा ह ने च मु चै ब्रू ते म म सखि
चपति व्यं द सं किं कं मे ॥ ७७ ॥ प म स्य मि
सु पदि शो लि नस्ति चे दिने दिने गच्छति
नाथ यो व न ॥ मृता य को दा स्य ति पिं ड सं
नि धो ति मे द कैः सार्धं म नो मृ दां भगां ॥
अ न चु ता ज ठ र स्य कु चो ग ता च

३४
लाः कुंठेण ह निगृहतां सलसखे सुयोक्त
योवर्तते ॥ ६२ ॥ अतो यस्मिन्नेष कृप ह्येव
त्रे लवस्त नी भेति मुदं ग मध्ये ॥ आत्रोदि
वाश्रयति पापपुत्र उति छत्रे डे गणपति
तु ॥ ६३ ॥ अत्र सत प्राप्ते पति विन ह रिना
सहचरी यदि प्राप्ता नु भूये तादिह वद भागि
मतिकः ॥ वयो गन्तो हो वा कु सुम विहि खो
वेसल दृशं तु हीति प्रथं क मं पिक निरु
संकां म श्रुतो ता ॥ ६४ ॥ का एष सत न पी न भा
नम मिता म अद निहा सति संत पो अ कि
ता वि को ल न य नां स प ज्य यु धा मृ गी वि को
वि चारु ने ता सु वि पु लो ज वा ना पी न व क्षो
रु हा ध्या दृष्ट्वा रूप व ती म न ग ग ह ना व
धो पि का मा य ते ॥ ६५ ॥ नितां कुं भ स त ले क
हि तां ता का मि नी ना म ना जे ले प क र्त्त ना भि
त म ति ग गेः कुं चु के ना व ते व ॥ ६६ ॥ या र मा
तं न न प ग ग हे दा नि प्रा त्रे भ डि मां शु डां
डे रि न सि व रु ला धु लि म धो ल यं ती ॥
६७ ॥ सिं ह ग भं लि त म्भ ग म य न नृ स
को वि दः ॥ ६८ ॥ नृ तु म तु न ता ना नी ल्य भा व

३६
धातुः के हि गृहं न योति क्वाप्तेन कस्माच्च चेद्वा
न जामाता तव निर्दयो नि जभुजास्तेषां
मां डि ति ॥ अंगानि त्रुतां कु नोति सततं दं
दे दं सो ए कं नीवी बंध विमोचनं च कुरुते
निद्रा बले भे निद्रि ॥ ८८ ॥ जागति लोको
ज्वलति प्रदिपा ॥ ८९ ॥ तं गे मापि प्रगायके
दिकला विना सै नापुर्दहि मिह सार्धं कपोत
नां ते ॥ पश्य प्रति सताम पूर्व तस प्रधाने उ
युः पयः पिवति काल बिडाले पेषः ॥ ९० ॥
मुचा मुमारे सफलं यवंच साधु सुहृदा प्रिय
शुष्कं मंगलान्य मृतमिव मे सिंचतु न चः
विधानां सौख्यानां सताम सि पूर्व स्वाप
यमुल्लं न मुञ्च्य प्रसेनु प्रभव ति गतः काल
हमिगः ॥ ९१ ॥ अन्य सुतावदु पमर्द सहास
भृगं लोलं विनोदयं मुनः सुमना लतास
मुञ्चा मजातु जसा किल काम काले ग
लोकदर्थं यसि किं नव मल्लिका ॥ ९२ ॥
कौवान संति भुवि वापि भूत ह्यव नं सहसा
वही वलपि नो जल संन्नि वेकाः ॥ किं चातका
फल मपेक्ष च पञ्जपातां पौनंदरी कलमत
न व वापि धातां ॥ ९३ ॥

३६
नण चे च ल तान प ने ग ता। सखि विने कय
मेत नु चे चि तं नि निमयं प्र कृ दीन व प्र व नं॥
२३। पाणि वल्ल भु वि च न य म धुः सी कृ
ता न प ना र्ध नि मे पाः। यो पि ता न ह। सि ग
मे २ वा च म स्तु ता मु प य पु म द न ह्य॥ ८३
ध मी लं प रि वे च्छ ता न ख मु खे सी मं त म त न्व
ती प र्श ये ती न खं को स वं कु च पु गे स मा प स मा
मु हः॥ ना भी सी म कु चि तां गु लि द लं नी की भ
वं रं ध ती श षा गा न वि। नि र्ग ता पि हू द यो
ना थ पि न प्र का म ति॥ ८४। शं ते म न्म थ सं ग
ने न ता भू तां सं स्का न मा त न्व ती का सो दा न व
ना स्प पी न कु च यो हा नं कृ ने कं ड न्॥ विं बो ष
स्य च वी टि को सु न य ना पा ढ्ये उ ण तं क ठे
श्री लं वि नि के शं पा न नि च य पु को हि ब ध्न
मः॥ ८५। आ दौ उ णा कु च भ या त पि कुं भ पु म्मे
जा तं प यो च न पु ग ह द ये ग ता याः॥ त त्रा पि व ल
भ न ख ह त मे दा सि न्वा ने वा म्म था स व ति य वि
खि ता नि धा त्रा॥ ८६। का मो हि त्र यं व क भ मे न
वि न सि नी नां प्रा प स्त न द प त हा तं न म ध्य द
कां॥ त त्रा पि तं उ स भ सं प्र ह वं ति त ज्ञा न का
पि सो ल्यं म पं ना च कृ तः प्र भू ष णा॥ ८७

सत्त्वजागो मुखा एवं तस्य द शान नस्य विभगे
 वातापिन श्रुते ॥ ३२ ॥ दुर्गाति कौटोपाय वा स
 मुद्रा न धा सि य धा ध न द श्र वि त्तं ॥ स जी
 व नी प स्य न वे ति वि च्छा स ना व ड को त्रु व का
 दि प न्नः ॥ ३३ ॥ जा तं बं ल व्रे कु ल्प व म न जी च
 न प ते यः कुं भ क र्ता नु जः पु त्रः शी कृ जि तं स
 पं द र्ता किं पं पु र्ता भु जा विं श तिः ॥ दे वः का
 म यु गो द न स्य वि ज पी म ध्ये स मृ दं गृ हं
 सर्व निष्कृ ति तं ल ला ह वि वि चि ना दे
 वे व ले दु वे ले ॥ ३४ ॥ अ ग्नि हो त्रे व श्र
 वे दे श्र रा धा सां ना गृ हे गृ हे ॥ ३५ ॥ दे वः
 वि ही न स्य ह नि ष्य नं न स र्गः ॥ ३५ ॥ अ भो
 वि ना णा द पु ण्य म न ने ना ध स्य द ष्यं रा प न
 न धृ गां ॥ म रू द ठो ह ण ण शं कृ ति मं दा वि
 नी मं ग ल सू त्र मं गः ॥ ३६ ॥ भ तो री मा व द
 स व ज क सु ते यो ह्यो ले क्का चि म्भ र्ति
 स स्या य श र्व मं ण द यु ग च न नं यो दि
 को प नि षा तु ॥ व धो दि ष्मा प का सि
 व न द यि ते कृ ल स मा भु नु प्र न स री
 ने न धु कु न ति न कः स्मे ति पू ज्यो ते म स्या ॥ ३७ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीमहादेवाय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥
 श्रीहरिभ्यो नमः ॥ १० ॥
 श्रीरामाय नमः ॥ ११ ॥
 श्रीलक्ष्मणाय नमः ॥ १२ ॥
 श्रीसुग्रीवाय नमः ॥ १३ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ १४ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ १५ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ १६ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ १७ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ १८ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ १९ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ २० ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ २१ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ २२ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ २३ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ २४ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ २५ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ २६ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ २७ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ २८ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ २९ ॥
 श्रीजयस्यो नमः ॥ ३० ॥

पतां कान्तां सिद्धो हं मद्विहता प्रियत
 मे फलने दृष्टान्ति गेन ॥ निध्याहं यत्न क
 प्रिया नहि नहि तं जातिन युत्त मा घस्या
 स क न ता डे न न न ज की वा सो म लं मुंच
 ति ॥ ५॥ दिवा को क न वा भी त ना त्रो त
 न म द्या ॥ ५॥ न्मध्यम क न ल न स क र्ण
 नं गुह्ये न्यसेतु ॥ ५॥ पाचि त्रं न्यसा दिव
 न व ना भी ति भा जो नि शा यं किं नु ब्रू
 मे स्ता दसि स न ग सा ह स ना थ त स्ये ॥ ५॥
 ते ग म द नि भू त नि भू तं बाल या त्म प्र का श
 कं किं नु ॥ ५॥ न हि न्मा न्ना सा पाणिः पापि क
 डि फणा ह त नो धा म ध्या ये ॥ ५॥ व पं
 व पं का का इ ति ज न पं ति का सो य ॥ न भो ति
 स्ति मि न हं ति का कां तं कि त मा न सा ॥ ५॥
 नो धी प प्रो ध न इ वा ति त नं प्र का शो नो
 नो गु र्ज नो स्त न इ वा ति त नं नि ष गू ढः ॥
 अर्थो गि म पि हि त पि हि त स्य किं चि त्
 सौ हा र्प मे ति न म हा हृ व र्ध कु चो त्त ॥
 ५॥ क ने वे णी मे णी स दृ श न य ना